IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला

शोधार्थी भावना कुमारी

पीएच.डी इतिहास विभाग

विश्वविद्यालय बी.एन.एम.यू मधेपुरा

सार

प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों की अद्वितीय प्रतिभा और इस्त निपुनता वर्तमान ऋग्वेदोक्त और लोकप्रियता, न केवल भारतीयों के बल्कि सारे ज्ञानी के विचारणीय है। मिथिला की सांस्कृतिक लोक -चित्रकला इसी वैदिक लोकप्रियता के आधार पर अन्य काल से तंत्र शास्त्र का अनुकूल प्रासंगिक और संस्कृत सम्बृद्धि रूप है। प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अब तक संपूर्ण भारतीय लोककला की जो विशेषता है, उसमें लोक-चित्रकला का स्थान महत्वपूर्ण है। चित्रकला के ही प्रश्रय से भूली सभ्यता, भूले चित्र हम भारतीयों के मानस पटल पर अंकित है। अन्वेषण के साथ-साथ चित्रकला कौशल भी मैथिल शैलियों से परस्पर लगा हुआ एवं सदा प्रशसनीय है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला पर प्रकाश डालना है और इसका हमारे जीवन में क्या प्रभाव पर सकता है। अतः यह शोध पत्र इस विषय पर केंद्रित है।

मुख्य बिंदु

लोक चित्रकला, सामाजिक, आर्थिक ,सांस्कृतिक और राजनीतिक योगदान शिक्षा।

परिचय

भारतवर्ष की धरती पर कई ऐसी कला शौक जो शास्त्र के भार से मुक्त हो तकनीकि सिद्धांतों और विवादों से परे हो और वाक्य कल्पना के स्तर से उतर दर सामान्य जीवन में रमती हो, जो भारतीय की नई पीढी को पुरातन कर सके। मिथिला की लोक-चित्रकला के इन नमूनों में जहाँ एक निराली सादगी और भोलापन है वहाँ आधुनिकतम कला की दो प्रमुख विशेषताएं भी सरलता से विशेष लक्ष्यों को प्राप्त करने में अत्यधिक उर्जावान है। श्री झा के अनुसार ये संकेत स्थूल जीवन के क्रिया कलापों और पदार्थों को ही नहीं बताते, अपितु सूक्ष्म अनुभूतियों एवं आध्यात्मिक धारणाओं को भी प्रदशित करते हैं।

ये चित्र एक ऐसे सामाजिक जीवन के अंग हैं, कुछ ऐसे क्रियाकलाप है, जो नये समाज में न केवल शामिल किये जा सकते हैं बल्कि उसे अनेक रंग दिखाने वाला सज्जा और विभिन्न स्वरपूर्ण शब्द से समृद्ध कर सकते हैं। जिन महिलाओं के हाथों से मिथिला के गृहोत्सव सम्पन्न होते थे और ये आकर्षक आलेपन और चित्र घरों में बनाये जाते थे, आज वे पाठ्शालाओं और क्लबों में साधना और मनोरंजन उपलब्ध करती है। विद्यालय हीं वर्तमान युग के गृह देवता के निकट है।

विद्यालयों में महिलाओं को कला शिक्षा दी जाए मिथिला के उन उत्सवों के सम्मिलित आयोजनों द्वारा (ग्रुप एक्टिविटी) जिनमें इन आलेपनों और मित्तिचित्रों का इत्यादि का विशिष्व स्थान होगा। पाठशालाएं जगमगा उठेंगी और कला का आकर्षक विषय होगी न कि आजकल ड्राइंग और मैंनुएल वर्क की तरह शुष्क।

इसी प्रकार सामाजिक केंद्रों, क्लबों व महिला मंडलों में लेक्चरबाजी और मशीन पर दजीगिरी का काम होने के साथ-साथ इन उत्सवों को सांसारिक रूप में मनाया जाय और उनके माध्यम से इस आकर्षक कला को चालू और विकसित करने का अवसर मिले, तो हमारा नवीन सामाजिक जीवन ऐसी उत्साहहीनता नहीं होगी। मिथिला की लोक संस्कृति आदिम जातियों की संस्कृतियों की तरह सहज ज्ञान मूलवासनाओं ,भय और उल्लास का प्रकटीकरण हीं नहीं है। वह तो पूर्णतः सनातनकाल से प्रवाहित ज्ञानधाराओं, मध्य युग में उत्कर्ष प्राप्त कलाओं और साहित्य -समुच्चय तथा विधि ,निगम तथा कर्मकाडों में निबद्ध जीवनचर्चा ,इन सभी से प्रेरित भी है और शृगारित भी । इसलिए मिथिला और ब्रजमंड्ल की संस्कृतियों में स्वतंत्र भावनाओं एवं उत्तम शैलियों, नैसर्गिक, मन के भावों का शब्दों में चित्रण तथा नागरिक आकर्षक का जो नियमित क्रम दिखाई देता है, वह संभव हीं अन्य किसी लोकसंस्कृति में मिले ।

मिथिला लोक चित्रकला केवल सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर हीं नहीं है बल्कि स्थान ,भेद से इस कला के द्वारा राजनैतिक , धार्मिक ,आध्यात्मिक ,सामाजिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों की जानकारी भी होते रहे हैं । मुख्य रूप से भूमिगत चित्र भित्तिचित्र एवं गतिमान तुंग पदार्थों पर बनाये गये चित्रों के तीन विभागों में विभक्त मिथिला लोक चित्रकला अपनी वास्तविक विशेषता के कारण आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर ख्याति अर्जित कर चुकी है। मिथिला लोक चित्रकला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहूंचने का क्षेत्र डब्ल्यू जी अर्चर को जाता है। डब्ल्यू जी अर्चर का 1934 में मिथिला में आना व 1949 में “मार्ग “ पत्रिका में उनके द्वारा लिखे लेख से मधुबनी कला को पहचान मिली। मधुबनी लोक चित्रकला को विशिष्ट रूप में सन 1960 ई0 में अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली। 1961-62 में मधुबनी चित्रकला में उपयुक्त कागज पर चित्रकारी ने इसे एक नयी दिशा प्रदान की। मिथिला लोक चित्रकला के मध्यम उत्पादित या निर्मित वस्तुओं का आर्थिक आयाम भी है, इसलिए यह आर्थिक प्रक्रिया से जुडे हुए हैं। इन कलात्मक उत्पादों का व्यापार अब देश-विदेशों में होता है , जिससे इस कलात्मक उत्पादों से जुडे लोगों को इसके व्यापार से काफी मात्रा में आर्थिक लाभ होता है। सम-समय पर ये लोग अपने उत्पादनों को लेकर विदेश यात्रा भी करते हैं। अतः इसका बहुआयामी व्यापारिक महत्व है। इस शोध पत्र का उद्देश्य मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला पर प्रकाश डालना है और इसका हमारे जीवन में प्रभाव पड सकता है।

शोधपद्धति

यह शोधपत्र द्वितीय स्त्रोत पर आधारित है जिसमें वर्णनात्मक अध्ययन को शामिल किया गया है तथा द्वितीय स्त्रोतों के अंतर्गत जर्नल, पत्रिका, किताबें,मूवी रिपोर्ट को शामिल किया गया है।

निष्कर्ष

मिथिला लोक चित्रकला एक परंपरा है। लोक शब्द के कई अर्थ हैं। लेकिन अभिप्राय ऐसे जनसमुदाय से है जो शहरी सभ्यता के प्रभाव से अपरिचित हो , गांव में निवास करता हो तथा अनपढ निष्कपट हो। इन लोगों की कला और संस्कृति भी इन्हीं के तरह सरल ,सहज और मंगलमयी होती है । इसका प्रत्यक्ष दर्शन मिथिला लोक चित्रकला के उपर्युक्त विवरणों से मिलता है।

सुझाव

जिन कलकारों के हाथों से मिथिला गृहोत्सव सम्पन्न होते थे और ये आकर्षक आलेपन और चित्र घरों में बनायें जाते थे, आज वे पाठ्शालाओं और क्लबों में साधना और मनोरंजन उपलब्ध करती है उन्हें पाठशालाओं और अन्य सामाजिक केंद्रों के कार्यक्रमों में सरकार द्वारा सम्मिलित कर लिए जाए। मिथिला लोकचित्रकलाकारों को मुफ्त शिक्षा सरकार के द्वारा प्रावधान करवाया जाए और उनकी आर्थिक स्थिति पर ध्यान दिया जाए ।

संदर्भ सूची

1.अयोध्यानाथ झा, मिथिला लोक चित्रकला शैली , शशि प्रकाशन ,दिल्ली ,2022

2.लक्ष्मीकांत झा, मिथिला की सास्कृतिक लोक चित्रकला ,किशोर विद्या निकेतन ,वाराणसी ,उत्तर प्रदेश, 2021

3.कृष्ण कुमार कश्यप ,मिथिला चित्र प्रवेशिका ,भारती विकास मंच , लाहेरिया सराय ,दर्भंगा , 2009

4.कृष्ण कुमार कश्यप, मिथिला चित्र कोर, भारती, मंच लहेरिया सराय, दरभंगा ,2009

5.राय एवं महतो ,मिथिला की लोक -संस्कृति, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली,2019